इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ।।

चत्वारस्तत्र वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।

आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ।।

क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम्।

एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।।

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।

नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते।।

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।

सन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः।।

प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः।

सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुरध्वराः।।

रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः।

वर्णनीया यथायोग्यं साङ्गोपाङ्गा अमी इह।।

कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।। (साहित्यदर्पण 6, 315-319)

महाकाव्य वह रचना है जो सर्गों में विभक्त होती है। इसका नायक देवता अथवा उच्चकुलोत्पन्न क्षत्रिय होता है जिसमें धीरोदात्त गुण होते हैं। कहीं कहीं महाकाव्य में एक वंश में उत्पन्न सत्कुलीन अनेक राजा भी नायक होते हैं। श्रृंगार, वीर, शान्त इनमें से कोई एक रस महाकाव्य का अंगी अर्थात् प्रधान रस होता है तथा अन्य रस इसमें गौण

अर्थात् अप्रधान होते हैं। इसमें सब नाट्य-सन्धियां रहती हैं। इसकी मुख्य कथा या तो ऐतिहासिक होती है अथवा सज्जनकुलीन व्यक्ति से संबंधित कोई प्रसि¼ कथा होती है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्षः इस चर्तुवर्ग में से कोई एक महाकाव्य का फल होता है। इसके आरम्भ में आशीर्वाद, नमस्कार या इसमें वर्णनीय वस्तु का निर्देश होता है। इसमें प्रसंगानुसार कहीं दुष्टों की निन्दा और कहीं सज्जनों के गुणों का वर्णन होता है। इसमें न बहुत छोटे, और न बहुत बड़े आठ से अधिक सर्ग होते हैं। उनमें प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द होता है। किन्तु सर्ग के अन्तिम पद्य का छन्द पूरे सर्ग में प्रयुक्त एक ही छन्द से भिन्न होता है। कहीं कहीं एक सर्ग में एक छन्द के प्रयोग की अपेक्षा अनेक छन्दों का प्रयोग भी मिलता है। सर्ग के अन्त में अगले सर्ग में आने वाली कथा की सूचना होनी चाहिए। इसमें जहां जहां आवश्यक हो, वहां वहां संध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातःकाल, मध्यान्ह, मृगया (शिकार), पर्वत, (छह) ½तुएं, वन, समुद्र, सम्भोग, वियोग, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, संग्राम, यात्रा, विवाह, मन्त्र, पुत्र का जन्म, अभ्युदय (उन्नति), ऐश्वर्य आदि का यथोचित सांगोपांग वर्णन होना चाहिये।

यदि हम महाकाव्य की उपर्युक्त परिभाषा का विश्लेषण करके देखें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि महाकाव्य की परिभाषा में दो भाग हैं: अंगी अर्थात् प्रमुख भाग तथा अंग अर्थात् सहायक या गौण भाग। प्रथम अर्थात् प्रमुख भाग में महाकाव्य के उन आवश्यक गुणों का सन्निवेश होता है जिनके अभाव में काव्य को महाकाव्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। इस प्रसंग में यह बात विचारणीय है कि साधारणतया काव्य रचना का प्रयोजन जीवन का उल्लासपूर्ण चित्रण माना जाता है। कवि की कृति तभी महान हो सकती है जबकि उसमें मानव के विस्तीर्ण और नानाविध जीवन का उसके पूर्णरूप में समावेश हो। मानव-जीवन को उसकी समग्रता में जानने के लिए तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं:मानव का व्यक्तित्व, समाज के ढांचे में उसकी स्थिति और उसका उत्तरदायित्व तथा उसके चारों और फैली विशाल प्रकृति से उसका सम्बन्ध। इसीलिए तो